

णोविषलिप्रवज्ज्ञेयः श्लिष्टोद्विशन्त्यः क्षतद्वयकरत्वाद्धेयः पुतिर्भलिनशन्त्यः सोपिक्षतपोषकश्चर्वितोवा जिह्मगोऽन्यल्लक्ष्यत्वेनप्रदर्शान्यत्रपातितः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥
 ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥